IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, 2022

आदिवासी विमर्श और स्त्री रचनाकार

डॉ० अनिल कुमार यादव
(स0शि0)
राजकीय कृत + 2 उच्च विद्यालय
बोआरी जोर, गोड्डा, झारखण्ड

सारांश –

हिन्दी–साहित्य में आज आदिवासी–विमर्श का प्रचलन जोर पकड़ रहा है। हिन्दी–साहित्य और समाज में जो यह बहस चल रही है, वह कितनी सार्थक और संपूर्ण है, यह तथ्य भी विचारणीय है। यह देश बहुत बड़ा है और आदिवासी समाज भी पूरे देश में अवस्थित है। एक नहीं, कई तरह के आदिवासी समूह हैं। उनकी अपनी भाषा है, अपना समाज है। हिन्दी–साहित्य में अगर कोई विमर्श चला है या पत्रकारिता में चल रहा है, तो उसे हम अपने स्तर से, अपने युगीन संदर्भ में आदिवासी–विमर्श भले कह लें, पर आदिवासी समाज के अंदर यह विमर्श कितना है? सवाल तो इस बात का है। यह आदिवासी–विमर्श हमारी भाषा में हमारे समाज का है, लेकिन आदिवासी समाज में यह कितना स्वीकृति पा सका है? इसे देखने की जरूरत है। हिन्दी साहित्य या पत्रकारिता में क्यों आज यह सवाल उठ रहा है? उसकी वजह सिर्फ एक है कि आज आदिवासी लड़ रहे हैं।

हिन्दी पट्टी में विमशों की खासी चर्चा रही है। सर्वप्रथम स्त्री–विमर्श की धूम रही, फिर दलित–विमर्श चला, इस बीच आदिवासी–विमर्श की आहट आने लगी। दलित विमर्श की धूम में आदिवासी की आवाज ठीक से सुनी नहीं जा सकी कालांतर में जब स्त्री–विमर्श के बाद... दलित विमर्श के उतार के चिह दिखने लगे हैं तो साथ–ही–साथ नये, अछूते और हाशिये पर रह रहे आदिवासी समाज का मंचों, संगोष्ठियों और पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से स्वर बुलंद हो रहा है।[1]

आदिवासी–विमर्श में स्त्री रखनाकारों के योगदान पर जब हम विचार करते हैं तो स्वी रचनाकारों की एक लंबी परंपरा हमारे सामने प्रस्तुत होती है। इन स्त्री रचनाकारों ने उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी, आत्मकथा आदि विधाओं में आदिवासी विमर्श की एक समृद्ध परंपरा का पोषण किया है। इनमें एलिस एक्का, महाश्वेता देवी, रमणिका गुप्ता, मैत्रेयी पुष्पा, मधु कांकड़िया, शरद सिंह, रोज केरकेट्टा, सुशीला धुर्वे आदि कथाकार के रूप

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

में प्रसिद्ध हैं। महिला कवयित्रियों में तममुलाअओ, ग्रेस कुजूर, उषा किरण आत्राम, निर्मला पुतुल, उज्ज्वला ज्योति तिग्गा, बंदना टेटे आदि चर्चित नाम सामने आते हैं। इन स्त्री रचनाकारों ने अपने लेखन से न केवल आदिवासी–विमर्श को स्थापित किया है, बल्कि स्त्री–विमर्श को नयी दिशा भी दी है।

आदिवासी–विमर्श पर लिखने वाली महिला रचनाकारों में एलिस एक्का का नाम सर्वोपरि है। एलिस का जन्म 1917 ई. में और निधन 1978 ई., में हुआ। अंगरेजी–साहित्य में वह पहली महिला आदिवासी ग्रेजुएट थी। एलिस ने हिन्दी में कहानियों लिखीं, किंतु उनके जीवन काल में कोई भी कहानी प्रकाशित नहीं हो सकी। उनकी मृत्यु के लगभग कई दशकों बाद वंदना टेटे ने गुमनाम हो चुकी एलिस एक्का और उनकी 11 रचनाओं को 'एलिस एक्का की कहानियों' नाम से संग्रहित कर प्रकाशित कराने का कार्य किया। ऐलिस ने अपनी कहानियों में आदिवासी समाज, संस्कृति, दर्शन, संघर्ष और अस्मिता के लिए संघर्ष करते आदिवासियों की शौर्य–गाथा को प्रस्तुत किया है।

महाश्वेता देवी आदिवासी साहित्य और विमर्श पर लिखने वाली विशिष्ट लेखिका है। इनका जन्म 1926 ई. में ढाका में हुआ था। कलकत्ता विश्वविद्यालय से उन्होंने अंगरेजी साहित्य में एम.ए. किया। लम्बे समय तक अंगरेजी साहित्य का अध्यापन कार्य किया। 'जंगल के दावेदार' महाश्वेता की विशिष्ट कृति है, जिस पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। मैगसेसे एवार्ड तथा भारतीय ज्ञानपीठ से भी इन्हें सम्मानित किया गया। ''जंगलों की माँ की तरह पूजा करने वाले अमावस की रात के अंधेरे से भी काले और प्रकृति और प्रकृति जैसे निष्पाप मुंडा, हो, हुल, संथाल, कोल और अन्य बर्चर असभ्य ? जातियों द्वारा शोषण के विरुद्ध और जंगल की मिल्कियत के छीन लिए गये अधिकारों को वापस लेने के उद्देश्य से की गयी सशक्त क्रांति की महागाथा' का नाम 'जंगल के दावेदार है।''[2]

रमणिका गुप्ता आदिवासी विमर्श पर लिखने वाली सशक्त लेखिका हैं। इनका जन्म 22 अप्रैल, 1930 को सुनाम (पंजाब) में हुआ। बिहारध्झारखण्ड की पूर्व विधाविका, विधान परिषद् की सदस्या, कई गैर–सरकारी स्वयंसेवी संगठनों से सम्बद्ध लेखिका, सम्पादक रमणिका गुप्ता ने अपना पूरा जीवन ही आदिवासी–विमर्श और आदिवासी जनांदोलन को समर्पित कर दिया। इनकी कृतियों में आदिवासी : विकास से विस्थापन,

आदिवासी साहित्य–यात्रा, आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह, आदिवासी कोन आदि प्रकाशित हैं। इनके दो लघु उपन्यास भी 'सीता' और 'मौसी' दोनों एक साथ प्रकाशित हैं।

मैत्रेयी पुष्पा बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं। इन्होंने स्त्री–विमर्श, आदिवासी–विमर्श पर समान रूप से काम किया है। मैत्रेयी का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' मध्य प्रदेश के कबूतरा जनजाति को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इसमें कबूतरा जनजाति के स्त्री–पुरुष अपनी अस्मिता को लेकर लगातार संघर्ष कर रहे हैं। ''उपन्यास सामंती दुश्वकों के चलते जनजातीय सभाज की त्रासदी भरी गाया कहता है। पुलिस प्रशासन की निगाहों में कबूतरा जनजाति चोर है। इसी पहचान के चलते रामसिंह खुद और मरने के बाद उसकी बेटी अपने वजूद की लड़ाई हार जाती है।''[3]

''कज्जा लोग तो सदा यही कहते हैं–कबूतरी–कबूतरा बदमाश जाति है। सब तरह की चोरियों उसी के सिर हैं।''[4]

मधु कांकड़िया स्त्री और आदिवासी विमर्श पर समान रूप से लिखने वाली लेखिका है। खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास इनकी चर्चित रचना है। यह उपन्यास नक्सलवाड़ी आंदोलन को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। मधु जी नक्सलवाड़ी आंदोलन को शोषक वर्ग के खिलाफ हौसले के रूप में देखती हैं।'' तो मैडम जी, नक्सलवाड़ी में हुए जमींदारों के विरुद्ध भूमि–दखल के आंदोलन ने जैसे हमें विश्वास का नया आकाश दिया और हम सभी कुछ कर गुजरने का हौसला संजोने वाले नवयुवकों पर नक्सल भाव छा गया मक्का–मदीना बन गई नक्सलवाड़ी हमारे लिए आमार वाड़ी नक्सलवाड़ी, तोमार बाड़ी नक्सलवाड़ी, राकलेर वाड़ी नक्सलवाड़ी। क्योंकि नक्सलवाड़ी ग्राम में ही पहली बार विद्रोह के स्वर फूटे थे और जमीन दखल की लड़ाई शुरू हुई थी।''[5]

आदिवासी–विमर्श को अपनी कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने वाली स्वी रचनाकारों में ग्रेस कुजूर का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। ग्रेस कुजूर की कविताओं में बार–बार विद्रोह के स्वर दिखाई देते हैं

''हे संगी।
क्यों घूमते हो
झुलाते हुए खाली गुलेल
क्या तुम्हें अपनी धरती की
सेंधमारी सुनाई नहीं दे रही?''[6]

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

ग्रेस कहती है कि जंगलों के संरक्षण से ही आदिवासियों का अस्तित्व सुरक्षित हो सकता है। आदिवासी युवकों को आहान करते हुए वे लिखती हैं–

''तानो अपना तरकस
नहीं हुआ है बोथरा अब तक
बिरसा आवा हीर
सूरज के लाल 'गोढा' को
गला दो अपनी हथेलियों की
गर्मी से।''[7]

निर्मता पुतुल आदिवासी कवयित्रियों में अपना अलग ही स्थान रखती हैं। इनकी कविताओं में आदिवासी–विमर्श और स्त्री–विमर्श दोनों एक ही साथ अभिव्यजित हुए हैं। एक तरफ वे आदिवासी स्त्रियों के संघर्ष को दिखाती हैं तो दूसरी तरफ आदिवासी–विमर्श को। पुतुल जी का कहना है कि जल, जंगल, जमीन के लिए निरंतर लड़ते, संघर्ष करते हुए आज आदिवासी मूक दर्शक और हत्प्रभ हो गये हैं–

''पहाड़ पर गुमसुम बैठे
पहाड़ी आदमी के चेहरे पर दिख रहा है उसके भीतर चुप्पी साधे बैठा है
पहाड़ का भूगोल
पहाड़ का इतिहास।''[8]

निर्मला पुतुल अपनी कविताओं में आदिवासी होने के साथ–साथ स्त्री होने की आवाज भी बुलंद करती हैं। पुतुल जी आदिवासी स्त्री–पुरुष की तस्करी उनके अधिकारों, स्वतंत्रता की बार–बार वकालत करती है–

''क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण ?
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को स्त्री दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा ?
अगर नहीं
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे

एक स्त्री के बारे में.....?''[9]

वंदना टेटे आदिवासी लेखिकाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन्होंने कई पुस्तकों का संपादन एवं प्रकाशन भी किया है, जिनमें मुख्य हैं– ''आदिवासी–दर्शन और साहित्य', 'एलिस एक्का की कहानियों' आदि।

उनकी कविताएँ आदिवासी संघर्ष एवं जीवन–दर्शन को परत–दर–परत खोलती है–

''फिर भी हम
जो उनकी झूठी भविष्यवाणियों में
उनके विकास के नक्से में
कई सदी पहले ही
'एक्टिक्ट' और विलोपित हो चुके हैं''[10]

एक अन्य कविता में वंदना जी लिखती हैं कि किस तरह से आदिवासी के अस्तित्व के साथ–साथ अन्य जीव–जंतुओं का भी अस्तित्व समाप्त हो रहा है–

''हम जा रहे हैं
जैसे चले गये भालु, हाथी और बाघ
जैसे चली गई घरों से फुदकती गौरेया
जैसे गायब हो गये मेंढक
जैसे खो गईं सब की सब तितलियों''[11]

निष्कर्ष –

अंत में निष्कर्ष रूप में कहें तो इन स्त्री रचनाकारों ने आदिवासी–विमर्श को लेकर न केवल श्रेष्ठ साहित्य का सृजन किया है, बल्कि जलवायु परिवर्तन, भूमण्डलीकरण, खत्म होते जंगल और प्राकृतिक संसाधन, सूखती नदियों, खत्म होते पशु–पक्षियों की दुनिया के प्रति भी सावधान किया है। आदिवासी–विमर्श में इन स्वी रचनाकारों ने आदिवासी स्त्रियों के जीवन–संघर्ष को भी बखूबी रूपावित किया है।

संदर्भ

1. आदिवासी विमर्श, रमेशचंद्र मीणा : दस्तक देहा विमर्श, रमेशचन्द्र मीणा, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ0–18.

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

2. जंगल के दावेरीकृष्णपेपर वैक्स के आवरण पृष्ठ से
3. 'आदिवासी अस्मिता बाबा कथा–साहित्य' –रसाल सिंह, बन्नाराम मीणा, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स प्रा.मि. पई दिल्ली, पृ. 151
4. 'आत्मा कबूतरी', मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 359
5. खुले गगन के लाल सितारे मधु कांकड़िया, पृ0–14
6. आदिवासी साहित्य विविध आयाम, सं. डॉ. रमेश सम्भा जी कुरे,
7. डॉ. मालती घोडोपंत शिंदे, प्राचार्य प्रवीण अनंतराव शिंद, विकास प्रकाशन कानपुर, पृ. 36
8. बरे, पृ. 37
9. 'नगाड़े के तरह बजते शब्द', निर्माता पुतुल, पृ. 8
10. बोना टेंटे के फेसबुक वाल से।
11. वही।